जुलाई: 2022

वर्ष : 5 अंक : 10

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

संस्थान का मासिक समाचार, जुलाई 2022 आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस अंक में जून, 2022 में संस्थान की गतिविधियों को दिखाया गया है।

जुलाई का महीना मात्स्यिकी क्षेत्र और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। एक ओर जहां संस्थान में 10 जुलाई को 'राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस' के रूप में मनाया जाता है और कई प्रकार के कार्यक्रम जैसे संगोष्ठी, किसानों के साथ पारस्परिक संवाद तथा प्रगतिशील किसानों को सम्मानित करना आदि वही पर 16 जुलाई को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का स्थापना दिवस भी मनाया जाता है।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है 21 जून को प्रति वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन और इसमें लोगों की सहभागिता। हमारे देश में दिनांक 21 जून 2022 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सरकारी कार्यालयों और योग केंद्रों को छोड़कर 75 स्थानों में योग शिविर लगाए गए। इस वर्ष कर्नाटक के 'अम्बा विलास पैलेस' मैसूर के दशहरा प्रदर्शनी मैदान में बड़े पैमाने पर योग सत्र का आयोजन किया गया जिसमें हमारे माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी जी ने भाग लिया। इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री के साथ, कर्नाटक के माननीय मुख्य मंत्री, मैसूर के शाही वंशज यदुवीर कृष्णदत्त चामराजा वाडियार और "राजमाता" प्रमोदा देवी वाडियार भी उपस्थित हुए। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस ग्रीष्म संक्रांति 21 जून को मनाई जाती है क्योंकि यह भारत में सबसे लंबा दिन होता है और इस दिन के उजाले की सबसे लंबी अवधि होती है।

योग अत्यंत सूक्ष्म विज्ञान पर आधारित आध्यात्मिक अनुशासन है, जो मन और शरीर के बीच सामंजस्य लाने का कार्य करता है । यह स्वस्थ जीवन जीने की कला और विज्ञान है। 'योग' शब्द संस्कृत मूल शब्द 'युज' से बना है, जिसका अर्थ है 'जुड़ना' या 'एकजुट होना'। योग का अभ्यास व्यक्तिगत चेतना के साथ सार्वभौमिक चेतना की ओर ले जाता है, जो मन और शरीर तथा मानव और प्रकृति के बीच एक पूर्ण सामंजस्य स्थापित करता है। दिनांक 21 जून 2022 को हमारे संस्थान और क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों में भी योगाभ्यास का आयोजन किया जाता है।

आइए, हम सब अपने दैनिक जीवन में योग को अपनाकर एक स्वस्थ जीवन की ओर अग्रसर हों।

धन्यवाद,

(बसन्त कुमार दास)

नमामि गंगे परियोजना के तहत भागलपुर में गंगा नदी में रैन्चिंग कार्यक्रम

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) बैरकपुर, कोलकाता द्वारा नमामि गंगे परियोजना के तहत 'राष्ट्रीय रैन्चिंग कार्यक्रम-2022' के अवसर पर भागलपुर के डॉलफिन संरक्षण एवं पर्यावरण संवेदी क्षेत्र (Eco sensitive) क्षेत्र के अंतर्गत गंगा नदी में करीब दो लाख मछलियों को छोड़ा गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य गंगा नदी की जैव विविधता को बनाये रखना एवं मछुआरों के बेहतर जीवीकोपार्जन हेतु उचित दिशा देना है। साथ ही यह गंगा में प्रदुषण स्तर भी को कम करने तथा नदीय पारिस्थितिकी को बनाये रखने में सहायक है।

इस मौके पर संस्थान के के निदेशक एवं नमामि गंगे परियोजना के प्रधान अनुवेषक, डॉ. बसंत कुमार दास ने कहा कि इस परियोजना के तहत संस्थान वर्ष 2018 से ही रैन्चिंग कार्यक्रम का शुभारंभ कर चुका है जिसके अंतर्गत लगभग 50 लाख से ज्यादा इंडियन मेजर कार्प प्रजातियों, रोहू, कतला, कलबासु की अंगुलिकाओ को उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल के गंगा नदी के विभिन्न नदी घाटों से छोड़ा जा चुका है। वर्तमान में उक्त रैन्चिंग कार्यक्रम मिशन मोड में किया जा रहा है, जिससे बहुत ही कम दिनों में अधिक से अधिक मत्स्य बीजों को गंगा नदी में छोड़ा जा सके। इसके अंतर्गत गंगा नदी से पकड़ी गई ब्रूडर मछलियों से प्राप्त बीजो को अंगुलिकाओ के आकार तक बड़ा किया जाता है एवं उन्हें गंगा नदी में छोड़ा जाता है जिससे नदी की गंगा की जैवविविधता बनी रहे।

नमामि गंगे परियोजना : सिफरी द्वारा भागलपुर में गंगा नदी में रैन्चिंग कार्यक्रम

बैरकपुर-कोलकाता
दबंग ब्यूरो

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) बैरकपुर, कोलकाता द्वारा नमामि गगे परियोजना के तहत 'राष्ट्रीय रैन्चिंग कार्यक्रम-2022' के अवसर पर भागलपुर के डॉलफिन संरक्षण एवं पर्यावरण संवेदी क्षेत्र (Eco sensitive) क्षेत्र के अंतर्गत गंगा नदी में करीब दो लाख मछलियों को छोड़ा गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य गंगा नदी की जैव विविधता को बनाये रखना एवं मछुआरों के बेहतर जीवीकोपार्जन हेतु उचित दिशा देना है। साथ ही यह गंगा में प्रदुषण स्तर भी को कम करने तथा नदीय पारिस्थितिकी को बनाए रखने में सहायक है।

इस मौके पर संस्थान के के निदेशक एवं नमामि गगे परियोजना के प्रधान अनुवेषक, डॉ. बसंत कुमार दास ने कहा कि इस परियोजना के तहत संस्थान वर्ष 2018 से ही रैन्चिंग कार्यक्रम का शुभारंभ कर चुका है जिसके अंतर्गत लगभग 50 लाख से ज्यादा इंडियन मेजर कार्प प्रजातियों, रोहू, कतला, कलबासु की अंगुलिकाओ को उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल के गंगा नदी के विभिन्न नदी घाटों से छोड़ा जा चुका है। वर्तमान में उक्त रैन्चिंग कार्यक्रम मिशन मोड में किया जा रहा है, जिससे बहुत ही कम दिनों में अधिक से अधिक मत्स्य बीजों को गंगा नदी में छोड़ा जा सके। इसके अंतर्गत गंगा नदी से पकड़ी गई ब्रूड को अंगुलिकाओं के आकार तक बड़ा किया जाता है एवं उन्हें गंगा नदी में छोड़ा जाता है इस नदी की गंगा की जैवविविधता बनी रहे। इस अवसर पर उपस्थित जिलाधिकारी, श्री सुब्रत कुमार सेन ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि छोड़ी गई मछलियां गंगा नदी की पारिस्थितिकी को सुदृढ़ करेगी एवं स्थानीय मछुआरों
आजीविका की समस्या को दूर कर
के साथ डॉलफिन संरक्षण में
सहायक होंगी। कार्यक्रम में कृ
विज्ञान केंद्र के डॉ. जियाउल अ
मत्स्य उपनिदेशक, शैलेन्द्र कुमार
कहा मछुआरों को छोटी मछलि
को नही पकड़ना चाहिए त
मत्स्यन पद्धति भी ऐसी हो जिस
अन्य मछलियों की मृत्यु ना हो। इ
कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानि
डॉ. हिमांशु स्वाइन तथा डॉ. विका
कुमार, जिला मत्स्य अधिका
कन्हैया कुमार, मत्स्य विका
पदाधिकारी, राजकुमार, अरु
कुमार, मत्स्य जीवी समि
सुल्तानगंज शोधार्थी मत्स्य पाल
और मत्स्य व्यवसायी उपस्थित थे

इस अवसर पर उपस्थित जिलाधिकारी, श्री सुब्रत कुमार सेन ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि छोड़ी गई मछलियाँ गंगा नदी की पारिस्थितिकी को सुदृढ़ करेगी एवं स्थानीय मछुआरों के आजीविका की समस्या को दूर करने के साथ डॉलफिन संरक्षण में भी सहायक होंगी। इस कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के डॉ. जियाउल और मत्स्य उपनिदेशक, श्री शैलेन्द्र कुमार ने कहा कि मछुआरों को छोटी मछलियों को नही पकड़ना चाहिए तथा मत्स्यन पद्धति भी ऐसी हो जिससे अन्य मछलियों की मृत्यु ना हो। इस कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिक, डा हिमांशु स्वाइन तथा डा विकास कुमार; स्थानीय जिला मत्स्य अधिकारी; श्री कन्हैया कुमार, मत्स्य विकास पदाधिकारी; श्री राजकुमार जी; श्री अरुण कुमार, मत्स्य जीवी सहयोग समिति, सुल्तानगंज शोधार्थी स्थानीय मत्स्य पालक और मत्स्य व्यवसायी सह 100 लोग उपस्थित थे।

गरीब कल्याण सम्मेलन: प्रधानमंत्री ने किसानों और अन्य लाभार्थियों से की बातचीत

31 मई 2022 को "आज़ादी का अमृत महोत्सव - भारतीय स्वतंत्रता समारोह के 75 वें वर्ष" के हिस्से के रूप में, "गरीब कल्याण सम्मेलन" कार्यक्रम में माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पिछले 8 वर्षों में राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार द्वारा शुरू की गई लगभग सोलह योजनाओं और कार्यक्रमों के भारत के विभिन्न हिस्सों में मौजूद लाभार्थियों के साथ शिमला में आयोजित वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बातचीत की। इन कल्याणकारी योजनाओं में प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, पोषण अभियान, आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना, स्वच्छ भारत अभियान, जल जीवन मिशन शामिल हैं।

बातचीत ने इन योजनाओं के अभिसरण और संतृप्ति की संभावना का पता लगाया और भारत के लिए नागरिकों की आकांक्षा का आकलन करने का अवसर दिया । यह सम्मेलन अब तक का सबसे बड़ा एकल सम्मेलन था, जहां प्रधान मंत्री ने लाभार्थियों के साथ बातचीत की और इन योजनाओं और कार्यक्रमों का उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में बताया। इस अवसर पर माननीय प्रधान मंत्री ने 10 करोड़ से अधिक किसानों को 21 हजार करोड़ रुपये से अधिक की किसान सम्मान निधि की 11वीं किस्त भी जारी की। राज्य स्तरीय गरीब कल्याण सम्मलेन कार्यक्रम का आयोजन को 31 मई 2002 को आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा पूर्वी रेलवे, कोलकाता के सहयोग से रेलवे इंडोर स्टेडियम, पूर्वी रेलवे खेल परिसर, बेहाला, कोलकाता में किया गया था।

इस कार्यक्रम में, श्री अश्विनी वैष्णव, माननीय रेल, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्री मुख्य अतिथि थे, श्री शुभेंदु अधिकारी, माननीय नेता प्रतिपक्ष, पश्चिम बंगाल विधान सभा विशिष्ट अतिथि थे। कार्यक्रम में निर्वाचित जनप्रतिनिधियों और 2000 से अधिक किसानों और अन्य

हितधारकों ने भाग लिया। डॉ. बि. के दास, निदेशक, भाकृअनुप-सीआईएफआरआई ने माननीय मंत्री और अन्य गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और कार्यक्रम की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। माननीय मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने संबोधन में उपस्थित लोगों को प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार द्वारा शुरू की गई सभी योजनाओं से पूरे भारत में लाखों लोगों को होने वाले लाभों के बारे में बताया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इन योजनाओं से करोड़ों लोगों का लाभ हुआ है और सबसे गरीब तबके की सबसे गंभीर समस्याओं जैसे आवास, पीने योग्य पानी की उपलब्धता, भोजन, स्वास्थ्य और पोषण, आजीविका और वित्तीय समावेशन का समाधान किया गया है।

कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, माननीय मंत्री और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने विभिन्न योजनाओं के 8 लाभार्थियों और किसानों और अन्य हितधारकों के साथ बातचीत की। संवाद सत्र के बाद, शिमला हिमाचल प्रदेश में मुख्य कार्यक्रम कार्यक्रम का कार्यक्रम स्थल पर सीधा प्रसारण किया गया और माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के भाषण को जोश के साथ सुना गया। 3 विधायकों, जनप्रतिनिधियों, 2000 किसानों, विभिन्न योजनाओं के लाभार्थी, कोलकाता और आसपास के जिलों में स्थित आईसीएआर संस्थानों के अधिकारी और स्टाफ सदस्य, पूर्वी, दक्षिण पूर्वी और मेट्रो रेलवे जोन के अधिकारी और कर्मचारी, डाक विभाग के अधिकारी सहित 2500 से अधिक प्रतिभागी इस अवसर पर उपस्थित थे।

नमामि गंगे परियोजना के तहत सिफरी ने पटना में गंगा नदी में रैन्चिंग किया

नमामि गंगे परियोजना, भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता के द्वारा राष्ट्रीय रैन्चिंग कार्यक्रम के तहत दिनांक 3 जून 2022 को पटना, बिहार में एक रैन्चिंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर भारतीय मेजर कार्प के 2 लाख मछली बीज को पटना के गंगा नदी में छोड़ा गया। इस रैन्चिंग का उद्देश्य गंगा नदी में मत्स्य प्रजातियों का संरक्षण और पुनरुद्धार करना है। कार्यक्रम का आयोजन मुख्य अतिथि, माननीय उपमुख्यमंत्री, बिहार सरकार श्री तारकिशोर प्रसाद की पावन उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर कृत्रिम रूप से तैयार किए गए ब्रूड मछलियों के बीजों को गंगा नदी में छोड़ा गया। इस कार्यक्रम में सिफरी के निदेशक, डॉ. बसंत कुमार दास और प्रधान अन्वेषक, नमामि गंगे; डॉ. रामेश्वर सिंह, कुलपति, बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना; डॉ. आशुतोष उपाध्याय, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना और श्री निशात अहमद, निदेशक, मत्स्य विभाग, बिहार सरकार ने स्थानीय मछुआरों को रैन्चिंग के महत्व तथा मछलियों के संरक्षण प्रति संवेदनशील बनाया। उन्होंने कहा कि इस रैन्चिंग कार्यक्रम उद्देश्य नदी की "अविरल धारा" और "निर्मल धारा" को बनाए रखना है। कार्यक्रम में सिफरी के वैज्ञानिक, मत्स्य निदेशक, सचिव, पीएफसीएस, स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ता और मछुआरे उपस्थिति थे ।

झारखंड की ग्रामीण आदिवासी महिलाओं को दिया गया सजावटी मछली पालन का प्रशिक्षण

पश्चिम बंगाल पशु और मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय (डब्लूबीयूएएफएस) के कुलपति प्रो.चंचल गुहा ने 30-05-22 को झारखंड की आदिवासी महिलाओं के लिए सजावटी मछली पालन पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डॉ.एच.एन.द्विवेदी, झारखंड के मत्स्य पालन विभाग के निदेशक और आईसीएआर-सिफ़री के निदेशक डॉ. बि.के.दास ने उद्घाटन सत्र में उपस्थित रहकर कार्यक्रम की शोभा में वृद्धि की ।

मुख्य अतिथि ने आदिवासी महिलाओं को संबोधित करते हुए बताया कि सजावटी मछली पालन पर यह अपनी तरह का पहला कार्यक्रम है, जो उनके आय सृजन के साथ-साथ आगे आने वाले समय में आजीविका के मार्ग प्रशस्थ करेगा। झारखंड के मत्स्य पालन

निदेशक, डॉ. द्विवेदीजी ने अपने संबोधन में उल्लेख किया कि झारखंड मत्स्य विभाग, आईसीएआर-सिफ़री के सहयोग से सजावटी मछली पालन का नेतृत्व करेगी और जनजातीय समुदाय के बीच व्यापक जागरूकता पैदा करेगी और ग्रामीण महिला हितधारकों को सजावटी मछली पालन करने के लिए हर संभव सहायता प्रदान करेगी।

सिफ़री के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने कहा कि मत्स्य पालन विभाग के परामर्श से लाभार्थियों के बीच सजावटी मछली पालन किट की 60 इकाइयां वितरित की गई हैं, और ग्रामीण महिलाओं ने पालन का अभ्यास शुरू भी किया है। चयनित लाभार्थियों को एफआरपी सजावटी टैंक (400 लीटर), सजावटी मछली बीज, मछली चारा, जलवाहक, दवा और अन्य सामान प्रदान किए गए थे। रांची, जमशेदपुर और बोकारो में ऑनसाइट प्रदर्शन और जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया और उन्हें प्रारंभिक कौशल प्रदान किया गया। इन पांच दिनों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में सजावटी मछली हैचरी में उन्हें न केवल मछली पालन के तरीके सिखाए गए बल्कि सजावटी मछली पालन के गांव का दौरा भी कराया गया । साथ ही पालन अवधि के दौरान उत्पन्न समस्यायों के हल भी बताए गए।

सजावटी मछली उद्योग ग्रामीण आबादी, विशेष रूप से आदिवासी समुदायों की महिलाओं के लिए आय का एक वैकल्पिक स्रोत है। झारखंड राज्य में 26% जनजातीय आबादी का निवास हैं। जमशेदपुर में लगभग 64 खुदरा और थोक सजावटी मछली उद्यम, कोलकाता के बाजार से सजावटी मछली पर निर्भर हैं। इस प्रशिक्षण में 30.05.2022 से 03.06.2022 के दौरान, प्रशिक्षुओं ने एक्वेरियम के निर्माण, सजावटी मछलियों को संभालने, विभिन्न सजावटी मछलियों जैसे गप्पी, मौली, प्लेटी और स्वोर्डटेल और अंडे जानने वाली गोल्ड फिश, कोई कार्प के प्रजनन की प्रक्रिया सीखी। उन्हें फ़ीड की आवश्यकता (प्राकृतिक और कृत्रिम दोनों) और मछली के भोजन के समय, सामान्य रोग और उनके उपचार के बारे में भी सिखाया गया। उन्हें एक्वेरियम में सामान्य प्रबंधन प्रथाओं जैसे पानी का आदान-प्रदान, थर्मोस्टेट का उपयोग, एक्वेरियम में एक साथ रखने के लिए संगत एक्वेरियम मछली प्रजातियों का चयन आदि पर भी प्रशिक्षण दिया गया। इसके अतिरिक्त, हावड़ा के पास एक सजावटी गांव में उन्हें ले जाया गया ताकि उन्हें प्रेरित किया जा सके। इस कार्यक्रम में कुल 28 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें से 25 महिलाएं (दो मत्स्य अधिकारियों सहित) थीं। महिला लाभार्थी में 13 महिलाएं अनुसूचित जनजाति से और बाकी अनुसूचित जाति के अंतर्गत थी। लाभार्थी पूर्वी सिंहभूम के पुंसा, नागा और शिलिंग गांवों से, जमशेदपुर और इकती, रांची के निवासी थे।

विश्व पर्यावरण दिवस-2022 का आयोजन

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) के नेतृत्व में प्रति वर्ष अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाला विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) एक विशिष्ट दिवस है। इस महत्वपूर्ण दिवस को पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरूकता फैलाने के लिए वर्ष 1973 से प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस का नारा है- "केवल एक पृथ्वी" और इसका फोकस है- "प्रकृति के साथ सामंजस्य बैठा कर रहना”। इस परिपेक्ष्य में भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) के मुख्यालय बैरकपुर, कोलकाता तथा इसके क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों ने 5 जून, 2022 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिससे लोगों में पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरूकता पैदा किया जा सके। कार्यक्रम के आरंभ में संस्थान परिसर में विभिन्न औषधीय गुणों वाले फल जैसे आंवला जामुन, सफेदा, रुद्राक्ष आदि का वृक्षारोपण किया गया तथा उनके पारिस्थितिक महत्व पर प्रकाश डाला गया। संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के. दास के मार्गदर्शन में निकटतम गंगा

नदी के घाट, शिवराफुली पर एक जागरूकता-सह-संवेदीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिससे आम लोगों को पर्यावरण संरक्षण और इसके महत्व के बारे में जागरूक किया जा सके। साथ ही 'प्लास्टिक मुक्त हरित ग्रह' अवधारणा पर 'स्वच्छ भारत अभियान किया गया, जिसके माध्यम से प्लास्टिक उपयोग के हानिकारक प्रभावों को समझाया गया और संभावित (जैव अपक्षय) बायोडिग्रेडेबल विकल्प की सलाह दी गई। संस्थान के निदेशक ने स्वस्थ जीवन और आजीविका के लिए उचित पर्यावरणीय संतुलन और जैव विविधता को बनाए रखने के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर बच्चों को भी पर्यावरण संरक्षण तथा पारिस्थितिकी तंत्र में जीवों के महत्व को बताने के लिए 'जलीय जैव विविधता' के विषय पर संस्थान कर्मियों और उनके बच्चों के लिए एक चित्रकारी प्रतियोगिता आयोजित की गई थी जिसमे 16 बच्चों सहित लगभग 45 लोगों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के माध्यम से 150 से अधिक आम लोगों को जागरूक किया गया जिससे वे पर्यावरण संरक्षण की एक दिशा में सकारात्मक दृष्टिकोण अपना सके।

डूमा बील में सिफ़री द्वारा एकीकृत आर्द्रभूमि प्रबंधन

आर्द्रभूमि को उसकी पारिस्थितिक विशेषताओं के कारण मानव जाति के लिए वरदान माना जाता है। इस परिपेक्ष्य में भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) ने पिछड़े वर्ग के मछुआरों की आजीविका सुधार के लिए आर्द्रभूमि मत्स्य पालन विकास पर लगातार काम कर रहा है। इस क्रम में सिफरी के निदेशक,डॉ. बि.के. दास के मार्गदर्शन में अनुसूचित जाति उपयोजना कार्यक्रम (एससीएसपी) के तहत वर्ष 2021 में उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल के डूमा बील (आर्द्रभूमि) में एकीकृत आर्द्रभूमि प्रबंधन विकास पर पहल शुरू किया गया, जिसका उद्देश्य तीन साल की अवधि में इस बील की मछली उत्पादन को 1000 किग्रा / हेक्टेयर/ वर्ष तक बढ़ाना है।

डूमा बील एशिया की सबसे बड़ी आर्द्रभूमि है जिसका आकार घोड़े की नाल के आकार जैसा है। इसका क्षेत्रफल 257 हेक्टेयर है और जल की गहराई 8-17 फीट है। इस आर्द्रभूमि का प्रबंधन डूमा मछुआरा सहकारी समिति द्वारा किया जाता है, जिसमें 1081 सदस्य हैं और इनमें 30 महिला मछुआरा हैं। इस बील पर आसपास स्थित 9 गांवों के मछुआरे पूरी तरह से इस आर्द्रभूमि पर निर्भर करते हैं। इस आर्द्रभूमि में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए गत वर्ष

एचडीपीई पेन, मछली फ़ीड, इंडियन मेजर कार्प प्रजाति, सिस्टोमस सराना और ग्रास कार्प के मत्स्य बीज आदि वितरित किए गए थे। इस प्रकार के सहयोग से सहकारी समिति ने पेन में मछलियों का पालन किया और 35-40 ग्राम का होने के बाद कम निवेश में बेहतर उत्पादन के लिए इन मछलियों को आर्द्रभूमि में छोड़ दिया। वर्ष 2021-22 में उन्होंने छोटी देशी मछली के अलावा लगभग 82 लाख मूल्य की लगभग 79 टन व्यावसायिक मछली का उत्पादन किया गया और उन्हे स्थानीय बाजार और मछली डीलरों के माध्यम से बेचा गया। इसके अलावा, नियमित रूप से 500 से अधिक सक्रिय मछुआरे 1-2 कि.ग्रा. औसत वजन की छोटी देशी मछलियों जैसे गुडुसिया छपरा, एंब्लीफरींगोडन मोला, सिस्टोमस सरना, पुंटियस सोफ़ोर,ग्लोसोगोबियस ग्यूरिस, मैक्रोनेथस प्रजाति, कैटफ़िश, छोटी मरेल मछलियों आदि को पकड़ते हैं।

पिछले वर्ष के समान संस्थान इस वर्ष भी 17 जून 2022 को "पेन में मछली पालन और प्रदर्शन सह जागरूकता कार्यक्रम" आयोजित किया गया था। इस अवसर पर छह पेन में लगभग 780 किलोग्राम मछली के बीज को संचयित किया गया। खरपतवार से भरे आर्द्रभूमि में 'ग्रास कार्प मॉडल को अपनाया गया। इस जन-जागरूकता कार्यक्रम में मछुआरों को एकीकृत आर्द्रभूमि प्रबंधन के विकास के विभिन्न पहलुओं के बारे में बताया गया, जिससे कम निवेश पेन में मछली पालन द्वारा मछली के बीज पालन करना भी शामिल था। आर्द्रभूमि मात्स्यिकी के विकास के लिए पेन पालन का प्रदर्शन कर मछुआरों को प्रेरित किया गया। डूमा में आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान सिफ़री के निदेशक, डॉ. बि.के. दास ने मछुआरों को अपनी आय में वृद्धि और छोटी देशी मछली प्रजातियों के संरक्षण के लिए आर्द्रभूमि में ऑटो-स्टॉक हेतु उच्च मूल्य वाले माइनर कार्प पालन और आर्द्रभूमि में जलमग्न मैक्रोफाइड्स को नियंत्रित करने के लिए ग्रास कार्प का स्टॉक करने का सुझाव दिया। निदेशक महोदय ने अगले वर्ष के लिए अतिरिक्त लाभ के 50% का उपयोग रिवॉल्विंग फंड के रूप में बचत करने की भी सलाह दी। जागरूकता के साथ-साथ एकीकृत आर्द्रभूमि प्रबंधन से संबंधित प्रमुख मुद्दों का आंकलन करने के लिए भागीदारी ग्रामीण मूल्यांकन (पी आर ए) किया गया।

असम के डिब्रूगढ़ जिले के आर्द्रभूमि मछुआरों में सिफरी केजग्रो फ़ीड और सिफरी एचडीपीई पेन का वितरण

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने मत्स्य विकास कार्यालय, डिब्रूगढ़, असम सरकार के सहयोग से दिनांक 24 जून, 2022 को आर्द्रभूमि मछुआरों के उन्नयन के लिए मछली फ़ीड और पेन वितरण किया। यह कार्यक्रम जिला मत्स्य विकास कार्यालय, डिब्रूगढ़, असम में आयोजित किया गया जिसमें कुल 10 टन सिफरी केजग्रो फ़ीड और 10 सिफरी एचडीपीई पेन डिब्रूगढ़ जिले के पांच आर्द्रभूमि के मछुआरों को दिए गए। कार्यक्रम का आयोजन सिफरी के निदेशक, डॉ बि के दास और गुवाहाटी केंद्र प्रमुख (कार्यवाहक), डॉ बी के भट्टाचार्य के मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. सिमंकु बोरा, वैज्ञानिक ने अतिथियो और प्रतिभागियों का स्वागत किया और कार्यक्रम के उद्देश्य के साथ पूर्वोत्तर क्षेत्र के मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास में सिफरी की गतिविधियां और संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकों जैसे पिंजरे और पेन में मछली पालन और सिफरी केजग्रो फीड पर भी प्रकाश डाला।

इस कार्यक्रम में श्री तीर्थनाथ हजारिका, निदेशक, मत्स्य विभाग, डिब्रूगढ़, असम सरकार ने अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के लिए प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना से मछुआरों को होने वाले लाभ के बारे में बताया। उन्होंने असम मत्स्य विभाग द्वारा की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों और कल्याणकारी योजनाओं के बारे में संक्षेप में बताया और लोगों से बील मत्स्य पालन की संभावित क्षमता का उपयोग करने के लिए वैज्ञानिक प्रबंधन प्रोटोकॉल अपनाने का आग्रह किया।

कार्यक्रम में श्री तीर्थनाथ हजारिका, निदेशक, मत्स्य विभाग, डिब्रूगढ़, असम सरकार के साथ श्री चक्रपानी पेगू, मत्स्य विकास अधिकारी; सुश्री परिष्मिता हांडीक, मत्स्य विकास अधिकारी और जिला मत्स्य विकास कार्यालय, डिब्रूगढ़ के कई अधिकारी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में कुल 30 मछुआरे उपस्थित थे ।

संस्थान द्वारा, सुंदरबन, पश्चिम बंगाल में "पौधों की किस्मों, किसानों के अधिकारों और अन्य आईपीआर मुद्दों के संरक्षण" पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने रामकृष्ण आश्रम कृषि विज्ञान केंद्र के सहयोग से 18 जून 2022 को निम्पीठ आश्रम, सुंदरवन, पश्चिम बंगाल में "पौधों की किस्मों, किसानों के अधिकारों और अन्य आईपीआर मुद्दों के संरक्षण" पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। स्वामी सदानंद जी महाराज, सचिव, राम कृष्ण आश्रम, निम्पीठ मुख्य अतिथि के रूप में और डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

डॉ. ए.के. दास, प्रभारी, विस्तार और प्रशिक्षण प्रकोष्ठ, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान ने सभी गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और इस जागरूकता कार्यक्रम के महत्व के बारे में जानकारी दी। स्वामी सदानंद जी महाराज, मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि उनका आश्रम एक कृषि विज्ञान केंद्र है जो एक जैव प्रौद्योगिकी संस्थान और ग्यारह स्कूलों के माध्यम से सुंदरबन क्षेत्र के गरीब वर्ग के विकास के लिए काम कर रहा है। उन्होंने जोर देकर कहा कि कृषि प्रौद्योगिकी ने समाज के निचले स्तर पर रहने वालों की आजीविका में सुधार करने और उन्हें मध्यम स्तर तक लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस के दर्शन के अनुसार, हमारा प्रयास ईमानदारी से और चुपचाप काम करने का होना चाहिए। उन्होंने सुंदरबन क्षेत्र में किए गए आजीविका वृद्धि कार्यों के लिए भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान की सराहना की।

डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सीआईएफआरआई ने अपने संबोधन में जोर देकर कहा कि आज इस जागरूकता कार्यक्रम में हम आपको किसानों के अधिकारों, पौधों की किस्मों के संरक्षण और अन्य आईपीआर मुद्दों के बारे में बता रहे हैं। उन्होंने कहा कि गोबिंदभोग चावल को भौगोलिक संकेतक का टैग मिला है। उन्होंने जैव विविधता अधिनियम और जैव विविधता के संरक्षण पर व्याख्यान दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सुंदरबन क्षेत्र जैव विविधता का आकर्षण का केंद्र है और एक बड़ी आबादी की आजीविका का समर्थन करता है और सुंदरवन क्षेत्र के आनुवंशिक संसाधनों के संरक्षण का समय आ गया है। उन्होंने गंगा और सुंदरबन क्षेत्र की मछली जैव विविधता के बारे में चर्चा की। श्री गणेश चंद्र, प्रभारी, संस्थान प्रौद्योगिकी प्रबंधन इकाई, आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने पौधों की किस्मों और किसान अधिकार अधिनियम 2001 के संरक्षण पर विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि यह एकल अधिनियम पौधों की किस्मों, अधिकारों के संरक्षण के लिए एक प्रभावी प्रणाली प्रदान करता है। किसानों और प्रजनकों और पौधों की किस्मों के विकास और भूमि नस्लों के संरक्षण को भी

प्रोत्साहित करते हैं और किसान बिक्री और लाइसेंस के माध्यम से पौधों की किस्मों के पंजीकरण के बाद भी मौद्रिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। डॉ. नीतीश रंजन प्रकाश, वैज्ञानिक (पौधे प्रजनन), भाकृअनुप-सीएसएसआरआई क्षेत्रीय केंद्र, कैनिंग टाउन ने पौधों की किस्मों और किसानों के अधिकारों के संरक्षण पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने पीपीवीएफआर प्राधिकरण को किसान किस्म के पंजीकरण के तंत्र के बारे में जानकारी दी। उन्होंने पौधों की किस्मों के पंजीकरण के लिए विशिष्टता, एकरूपता और स्थिरता (डीयूएस) परीक्षण मानदंड के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि अब तक प्राधिकरण में पंजीकृत लगभग 5000 पौधों की किस्मों में से 2000 किसान किस्म हैं।

केवीके निम्पीथ के प्रमुख डॉ. चंदन कुमार मंडल ने किसानों की किस्मों के पंजीकरण में किसानों की मदद करने में कृषि विज्ञान केंद्र की भूमिका पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि किसान/किसानों का समूह या एफपीओ पौधों की किस्मों के पंजीकरण के लिए आवेदन कर सकते हैं।

गंगा सागर के प्रगतिशील किसान श्री सुखदेव, जिन्होंने पौधा किस्म, कृषक अधिकार संरछण पधिकरण(पीपीवी और एफआर) अधिकारियों के साथ चावल की एक स्थानीय किस्म पंजीकृत किया है। ने अपने साथी किसानों के साथ पौधों की किस्मों, डीयूएस परीक्षण के पंजीकरण के अपने अनुभव को साझा किया।

जागरूकता कार्यक्रम में सुंदरबन के विभिन्न हिस्सों के 70 किसानों, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थानके वैज्ञानिकों, रामकृष्ण आश्रम कृषि विज्ञान केन्द्र, निम्पीठ के वैज्ञानिकों और स्टाफ सदस्यों, सूरजमुखी पर एआईसीआरपी के वैज्ञानिकों सहित 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों द्वारा किसानों को बीज एवं रोपण सामग्री का वितरण किया गया। कार्यक्रम का समापन डॉ पी के गरई, विषय वस्तु विशेषज्ञ, रामकृष्ण आश्रम कृषि विज्ञान केंद्र, निम्पीठ द्वारा प्रस्तावित औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

सुंदरबन के मछुआरों का सतत विकास

दुनिया का सबसे बड़ा डेल्टा क्षेत्र "सुंदरबन" को भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) द्वारा चक्रवात का केंद्र स्थल भी माना गया हैं। 1.5 वर्षों की अवधि में यहाँ के निवासियों ने लगातार दो चक्रवात (जावद और यास) देखे हैं। यह कई लुप्तप्राय जानवरों जैसे रॉयल बंगाल टाइगर, इरावदी डॉल्फ़िन, खारे पानी के मगरमच्छ आदि के साथ-साथ लगभग 3 मिलियन लोगों का वासस्थान भी हैं जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपनी आजीविका और अन्य आवश्यकताओं के लिए इस पर निर्भरशील हैं। अत्यधिक प्राकृतिक आपदाएँ जैसे चक्रवात, तूफान की लहरें, विशाल ज्वार-भाटा और खारे पानी की घुसपैठ उनकी आजीविका और सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन शैली पर बड़ा कहर ढा रही है। यहाँ के निवासी मूल रूप से प्रोटीन के प्रमुख स्रोत के लिए मछली और मुख्य भोजन के रूप में चावल पर निर्भर करते हैं। यही कारण है कि मछली

उनके जीवन और आजीविका का एक अभिन्न अंग है। इस क्षेत्र के प्रत्येक घर के पीछे एक छोटा तालाब है जिसमें मुख्य रूप से चावल और मछली पालन होता हैं, जिसका बड़ा हिस्सा उनके स्वयं के लिए है और थोड़ा हिस्सा (15-20%) विपणन के लिए ।

निदेशक, डॉ. बि.के. दास के नेतृत्व में आईसीएआर-सिफ़री ने सुंदरबन के ग्रामीण संकटग्रस्त मछली किसानों की आजीविका को सुधारने लिए एससीएसपी/टीएसपी विकास कार्यक्रमों के तहत विभिन्न तकनीकी इनपुट प्रदान कर उनकी अथक सहायता कर रहा है। सिफ़री ने वैज्ञानिक मछली पालन के लिए तकनीकी सहायता के साथ-साथ मछली बीज, मछली चारा, चूना, आदि जैसे इनपुट प्रदान करके कुलतली, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल के 500 मछली किसानों का समर्थन किया और साथ ही सजावटी मछली पालन तकनीक के द्वारा ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाया। इन विकासात्मक गतिविधियों को नवंबर 2021 में 500 मछुआरों के समूह में 32 लाख निवेश से रु. 2.0 करोड़ रुपये की आमदनी कर माननीय प्रधान मंत्री के "किसानों की आय को दोगुना करने" के सपने को साकार करने के उद्देश्य से शुरू किया गया था। तकनीकी सहायता, आवश्यकता-आधारित सलाह के साथ-साथ 3.0 लाख मछली बीज, 52.5 टन मछली फ़ीड और 10.0 टन चूना और 55 सजावटी मछली पालन इकाइयों को 555 लोगों के बीच वितरित किया गया। साथ ही उनके लिए लाइव प्रदर्शन, जन जागरूकता कार्यक्रम और साइट पर प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों की व्यवस्था की गई।

दिसंबर 2021 से मई 2022 के छह महीने के अवधि के दौरान यह देखा गया है कि, प्रत्येक परिवार ने रु.10,000 –15,000/- में औसतन 100-150 किलोग्राम मछली बेची है, और उनके पास तालाब में अभी भी 60% से अधिक स्टॉक है। इसलिए, यह उम्मीद की जाती है कि कुल 200 -300 किलोग्राम मछली का उत्पादन होगा, जिसकी अनुमानित औसत आय रु.22,000-

30,000/- हैं । इस क्लस्टर से उनके निजी खपत के अलावा कुल 1.25 करोड़ की आय होने की उम्मीद है। इसी क्रम को जारी रखते हुए 19-06-2022 को कुलतोली में जन जागरूकता सह इनपुट वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. बि. के. दास ने मछली पालकों को वैज्ञानिक मत्स्य पालन के लिए प्रोत्साहित किया और मछली पालन पर उनकी शंकाओं का समाधान भी किया। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि कुल लाभ में से, मछुआरों को कुछ पैसे रिवाल्विंग फंड के रूप में अपने स्वयं के उपयोग के लिए रखना चाहिए। इस वितरण कार्यक्रम के दौरान 500 मत्स्य किसानों को 3.00 लाख आईएमसी मछली बीज, 35 टन मछली चारा, 100 मिलीलीटर मछली दवा भी प्रदान की गई। इस कार्यक्रम का संचालन सिफ़री के डॉ. ए. के. दास, डॉ. पी. के. परिदा, सुश्री पी.आर. स्वैन, श्री सुजीत चौधरी, सुश्री एस.भौमिक, डॉ. श्रेया भट्टाचार्य और कुलतोली मिलन तीर्थ सोसाइटी के सदस्यों द्वारा किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2022 का संस्थान मुख्यालय और सभी क्षेत्रीय केंद्र में आयोजन

ICAR- CENTRAL INSTITUTE OF

मुख्य शोध उपलब्धियां

- छत्तीसगढ़ के छोटे जलाशयों की मत्स्य उत्पादन में 87 कि.ग्रा.प्रति हे.प्रति वर्ष (2007-08) से बढ़कर 360 कि.ग्रा.प्रति हे.प्रति वर्ष (2019-20) दर्ज किया गया है, जो संसाधन हीन मछुआरों को लाभान्वित करने वाले पालन आधारित मात्स्यिकी तकनीक को अपनाने के कारण हुआ है।
- पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और पश्चिम बंगाल के नदिया, पुरबा बर्धमान, उत्तर 24-परगना और मुर्शिदाबाद जिलों से पंद्रह बाढ़कृत मैदानों के लचीलेपन का आंकलन किया गया। इसके लिए हितधारकों को एक प्रश्नावली के आधार पर एक पारिस्थितिक सेवा स्कोर विकसित किया गया था। पारिस्थितिक सेवाओं के स्कोर यह संकेत देते हैं कि अधिकतम पारिस्थितिक सेवाएं पूर्वस्थली (पूर्व बर्धमान जिला) और न्यूनतम राजा आर्द्रभूमि (शहरी आर्द्रभूमि) द्वारा प्रदान की गईं।
- मस्तसेम्बेलिडे परिवार के अंतर्गत स्ट्राइप स्पाइनी ईल, *मैक्रोग्नाथुसरल* (ब्लोच एंड श्नाइडर, 1801) को पहली बार उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल के गांगेय क्षेत्र से एक नए रूपक के रूप में रिकॉर्ड और वर्णित किया गया था। एक ही जैतून के हरे से नीले रंग में जीवित नमूना और पृष्ठीय और गुदा मछली के आधार दोनों में ओसेली होता है और इस प्रकार को खाद्य मूल्य के अलावा संभावित सजावटी मछली के रूप में माना जा सकता है।
- कृष्णा नदी में, 10 से 25 किलोग्राम के कतला मछली (*लेबिओ कतला*) की प्रचुरता नदी के ऊपरी हिस्से में पाई गई, जबकि रोहू (*लेबिओ रोहिता*) निचले हिस्से में अधिक पाई गई। इस नदी में विदेशी प्रजातियाँ जैसे *ओरियोक्रोमिस नाइलोटिकस*, ओ. मोसाम्बिकस, क्लेरियस गैरीपिनस और टेरिगोलिक्थिस पाए गए। इनमें *ओरियोक्रोमिस नाइलोटिकस* सबसे प्रमुख प्रजाति थी जो सोमसिला से रेकुलवल्यम खंड को छोड़कर नदी के पूरे खंड के कुल पकड़ का 50-70 प्रतिशत दर्ज की गई।
- नदियों में वाइल्ड मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण और पुनरुद्धार के लिए के लिए 25 मई से 3 जून 2022 तक गंगा नदी में रोहू, कतला और मृगल के 10.3 लाख कृत्रिम रूप से निषेचित किए गए मछली जर्मप्लाज्म को पांच स्थानों जैसे नवद्वीप दक्षिणेश्वर, फरक्का, भागलपुर, पटना में गंगा नदी में छोड़ा गया।
- मई 2022 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज-पटना खंड से 6.318 टन 1.78 टन मछली लैंडिंग का अनुमान लगाया गया था। उसी महीने के पिछले वर्ष की तुलना में, कुल मछली पकड़ में लगभग 38.55 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई ।
- पश्चिम बंगाल के रंगित नदी में प्रस्तावित बैराज (टीएलडीपीआई/द्वितीय) के प्रभाव की जांच की गई। इसमें यह देखा गया कि इस बैराज स्थल में समृद्ध वन और प्रवासी मछली प्रजातियां के साथ किशोर मछलिया भी हैं । प्रवासी मछली प्रजातियों में, स्नो ट्राउट, साइजोथोरेक्स और महसीर वर्ग में तोर तोर प्रमुख हैं। प्रभाव आकलन में गंभीर क्षति दर्ज की गई अतः प्रस्तावित बैराज स्थल मत्स्य प्रजातियों के लिए उपयुक्त स्थल नहीं हैं।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 31 मई 2022 को प्रधानमंत्री गरीब कल्याण सम्मेलन के अवसर पर राज्य स्तरीय समारोह में भाग लिया। इस कार्यक्रम का आयोजनसिफरी बैरकपुर द्वारा पूर्वी रेलवे, कोलकाता के सहयोग से रेलवे इंडोर स्टेडियम, पूर्वी रेलवे खेल परिसर, बेहाला, कोलकाता में किया गया था। माननीय रेल, संचार, इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर 2500 से अधिक प्रतिभागी उपस्थित हुए।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 30 मई 2022 को प्रौद्योगिकी से संबंधित मात्स्यिकी संभाग की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 6 जून, 2022 को कल्याणी विश्वविद्यालय में ग्रीन मीट-2022 में भाग लिया और "स्थायी जलीय जैव-विविधता संरक्षण और प्रबंधन के लिए पारिस्थितिकी तंत्र दृष्टिकोण" पर प्रस्तुति दी।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 21 जून, 2022 को उप-महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) द्वारा बुलाए गए रणनीतिक रोडमैप तैयार करने के लिए विजन 2047 पर बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 22-23 जून, 2022 को पूर्वी गंगा के मैदानी इलाकों में खाद्य प्रणालियों में चुनौतियों और अवसरों पर आभासी बैठक में भाग लिया।

कार्यक्रम

- विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून 2022 को संस्थान परिसर में पौधा रोपण के साथ आयोजित किया गया था और लोगों को एकल उपयोग प्लास्टिक के नुकसान के बारे में जागरूक करने के लिए दुपैसा घाट पर संवेदीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया था।
- झारखंड की ग्रामीण आदिवासी महिलाओं के लिए "आय सृजन और आजीविका वृद्धि के लिए अंतर्देशीय सजावटी मत्स्य प्रबंधन" पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 30 मई से 3 जून के दौरान आयोजित किया गया जिसमें 28 महिलाओं ने भाग लिया।
- विनोभा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड के प्राणिविज्ञान के स्नातकोत्तर छात्रों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर अभिविन्यास प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए 7 दिवसीय पाठ्यक्रम पाठ्यक्रम 16-22 जून, 2022 के दौरान आयोजित किया गया था जिसमें 16 छात्रों ने भाग लिया।
- सिफरी ने 19 जून, 2022 को 500 मछली किसानों को 3 लाख आईएमसी मछली बीज, 35 टन मछली चारा वितरित किया। इस दौरान एक जन जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। प्रत्येक अनुसूचित जाति के मछुआरों को 100 मिलीलीटर मछली दवा भी प्रदान की गई।

सिफरि समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

इंडियन पंच — 16 जून 2022

हिलसा मछली व गंगेटिक डॉल्फिन के संरक्षण के लिए हुआ मंथन

साहिबगंज। संवाददाता।

हिलसा मछली व डॉल्फिन का संरक्षण कर गंगा नदी को स्वच्छ व निर्मल बनाने के लिए बुधवार को कॉलेज रोड स्थित मछुआ सोसाइटी में जिला मत्स्य पदाधिकारी, मत्स्य प्रसार पदाधिकारी, दी झारखण्ड ईस्टर्न गंजेटिक फिशरमैन कोऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड के पदाधिकारी एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केंद्रीय अंतर स्थलीय मत्स्यकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के वैज्ञानिक व रिसर्च अनुसंधानक डॉ वीके दास के मार्गदर्शन में लगातार हिलसा मछली की रिवर रेंचिंग कर रही है अभी तक 64881 हिलसा मछली गंगा नदी में रिवर रैचिंग के तहत छोड़ा गया है। इसके साथ ही फरक्का बराज के ऊपरी क्षेत्र के गंगा के फैलाव में 5.50 लाख हिलसा के अंडे छोड़े गए हैं इसके तहत सर्वे एवं जागरूकता कार्यक्रम पूरे साल फरक्का के ऊपरी क्षेत्र के गंगा के फैलाव क्षेत्र में प्रयागराज, अलाहाबाद तक चलाया जा रहा है। मौके पर डॉ सौरभ नंदी, अध्या कुमनी,

गंगा में 5.50 लाख मछली का जीरा डाला

साहिबगंज. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद व केंद्रीय अंतर... बैरकपुर की ओर से फरक्का बराज के ऊपरी फैलाव क्षेत्र के ... वीके दास निदेशक व प्रधान अनुसंधानक प्रोजेक्ट के मार्गदर्शन ... की रिवर रेचिंग की जा रही है. 64881 हिलसा मछली बुधवार ... बराज के ऊपरी क्षेत्र के गंगा के ... गये हैं. इसके तहत सर्वे व जा... ...त्र में प्रयागराज अलाहाबाद तक

दैनिक दबंग दुनिया

नमामि गंगे परियोजना के तहत सिफरी ने पटना में गंगा नदी में किया रैन्चिंग

बैरकपुर, कोलकाता। नमामि गंगे परियोजना, भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर कोलकाता के द्वारा राष्ट्रीय रैन्चिंग कार्यक्रम के तहत 3 जून को पटना, बिहार में ... के निदेशक, डॉ. बसंत कुमार दास और प्रधान अन्वेषक नमामि गंगे, डॉ. रामेश्वर सिंह, कुलपति बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय पटना एवं डॉ. आशुतोष उपाध्याय, निदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान

'Ranching, seed production improve fish population'

Subhro Niyogi
@timesgroup.com

Kolkata: In earlier studies, 79 native Gangetic fish species were detected between Kanpur and Farakka. But the present study reported 103 species from there. The lower zone from Farakka to Tribeni in Bengal reported 123 species and freshwater tidal stretch of the river 72 fish species with hilsa and other small fish species, like chella, morari, Gangetic river sprat, Indian river shad dominating.

The improvement in fish diversity and population follows multiple initiatives taken by CIFRI, including ranching and seed production of indigenous Gangetic fish species. Over 47 lakh fingerlings of major Indian carps have been ranched.

Landing data from Ganga ghats showed a rise in fish stocks after ranching. The rise in fish population has helped improve water quality.

Fishermen Purna Patra from Godakhali and Binay Biswas from Tribeni say the catch has increased. "Local varieties that were rarely found in the catch are now being netted," said Biswas.

Farakka region in Bengal recorded 84 fish species, highest in the stretch, indicating congenial riverine environment supporting stable fish population. "In lower Bengal, four exotic species — crocodile fish, bighead carp, grass carp and silver carp — were reported, showing population stability largely due to riverine ecology change," said CIFRI director and project investigator Basanta Kr Das.

The decline between 1991 and 2012, CIFRI scientists said was due to deterioration in the river's water quality because of effluent from civic bodies and industries, and overfishing. ICAR-CIFRI, with other agencies engaged in Ganga Action Plan, rechristened National Mission for Clean Ganga, has managed to stem the decline and revive 50 species. But species like pangasius, pabda catfish, giant river goonch, chitala and silond catfish are less abundant in the river and require more effort.

Endangered Hilsa, Kajri, Vacha back, fish diversity up in Ganga

190 & COUNTING

[illegible]

आदिवासी ग्रामीण महिलाओं को सजावटी मछली पालन का प्रशिक्षण दिया

भाकृअनुप » दबंग ब्यूरो

केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) में आदिवासी उप-योजना के तहत मुख्यालय, बैरकपुर में 30 से 03 जून तक छतीसगढ़, झारखंड की आदिवासी महिलाओं के लिए सजावटी मछली पालन पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसका उदघाटन पशु और मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल के कुलपति, प्रो.चंचल गुहा ने किया। इस अवसर पर डॉ.एच.एन. द्विवेदी, निदेशक, मत्स्य पालन विभाग, झारखंड सरकार और सिफरी के निदेशक, डॉ. बि.के.दास भी उपस्थित थे। मुख्य अतिथि ने आदिवासी महिलाओं को बताया कि सजावटी मछली पालन पर यह अपनी तरह का पहला कार्यक्रम है, जो उनके आय सृजन के साथ-साथ आने वाले समय में आजीविका के मार्ग प्रशस्त करेगा। डॉ. द्विवेदी जी ने यह बताया कि झारखंड मत्स्य विभाग, सिफरी के सहयोग से सजावटी मछली पालन में सहयोग करेगी और आदिवासी समुदाय के बीच जागरूकता पैदा कर ग्रामीण महिला हितधारकों को इस पालन करने के लिए हर संभव सहायता प्रदान करेगी।

सिफरी के निदेशक, डॉ. बि.के. दास ने कहा कि मत्स्य पालन विभाग के परामर्श से लाभार्थियों के बीच 60 सजावटी मछली पालन किट वितरित की गई हैं और ग्रामीण महिलाओं ने पालन शुरू भी कर दिया है। चयनित लाभार्थियों को एफआरपी सजावटी टैंक (400 लीटर), सजावटी मछली बीज, मछली चारा, दवा और अन्य सामान प्रदान किए गए हैं। रांची, जमशेदपुर और बोकारो में स्थल प्रदर्शन और जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया और उन्हें प्रारंभिक कौशल प्रदान किया गया है। इन पांच दिनों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में सजावटी मछली हैचरी में उन्हें न केवल मछली पालन के तरीके सिखाए गए बल्कि सजावटी मछली पालन के लिए संबन्धित गांवों का दौरा भी कराया गया, और पालन अवधि के दौरान उत्पन्न समस्यायों के हल भी बताए गए।

सजावटी मछली उद्योग ग्रामीण लोगों, विशेष रूप से आदिवासी समुदायों की महिलाओं के लिए आय का एक वैकल्पिक स्रोत है। झारखंड राज्य में 26 प्रतिशत जनजाती लोग रहते हैं। जमशेदपुर में लगभग 64 खुदरा और थोक सजावटी मछली दुकानें हैं जो कोलकाता के सजावटी मछली बाजार पर निर्भर करते हैं। इस प्रशिक्षण महत्वपूर्ण पहलुओं जैसे एक्वेरियम को बनाना, सजावटी मछलियों का रख-रखाव, विभिन्न सजावटी मछलियों जैसे गप्पी, मौली, प्लेटी और स्वोर्डटेल और अंडे देने वाली गोल्ड फिश, कवई कार्प के प्रजनन की प्रक्रिया आदि पर प्रकाश डाला गया। मछलियों को फीड (प्राकृतिक और कृत्रिम दोनों) और उन्हे भोजन के समय, सामान्य रोग और उनके उपचार, सामान्य प्रबंधन तरीकों जैसे पानी का आदान-प्रदान, थर्मोस्टेट का उपयोग, एक्वेरियम में एक साथ रखने के लिए अनुकूलित एक्वैरियम मछली प्रजातियों का चयन आदि पर भी प्रशिक्षण दिया गया।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मासिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है